International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 13-05-2024, Accepted: 13-06-2024, Published: 28-06-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 25-27

हरियाणवीं छन्नों की लोक सांस्कृतिक विशेषताओं का मूल्यांकन

महासिंह पूनिया
हिन्दी विभागाध्यक्ष, आई.आई.एच.एस., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

सारांश
उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात् कहा जा सकता है कि हरियाणवीं लोकजीवन में दम तोड़ रही 'छन्न विधा' परम्परागत रूप से सदियों पुरानी रही है। लेकिन वर्तमान दौर में आधुनिकता की चपेट में आने के पश्चात् इसका वजूद खतरे में पड़ गया है। इस विधा के अन्तर्गत अनेक विशेषताएं समाहित हैं, जो हमारे समाज की परम्परागत संस्कारों की परिचायक ही नहीं, अपितु लोकजीवन की साक्षात् अभिव्यक्ति भी हैं। 'छन्न' जहां एक ओर दोनों परिवारों में परस्पर समन्वयता स्थापित करने का कार्य करता है, वहीं पर दूल्हा–दुल्हन के यार–दोस्तों एवं सखी–सहेलियों को परस्पर घुलने–मिलने का अवसर पर भी प्रदान करता है, ताकि दोनों पक्षों का भावी–जीवन सुखद एवं सुनहरा हो सके। आधुनिक दौर में बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण 'छन्न' की महत्ता और अधिक बढ़ गई है, क्योंकि आधुनिकता की इस दौड़ में वैवाहिक एवं पारिवारिक रिश्तों पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि हम अपनी पुरातन परम्पराओं को भुलते जा रहे हैं। 'छन्न' विधा पर अभी तक कोई शोध नहीं हुआ है। ऐसे विषयों को शोध का विषय जरूर बनाया जाना चाहिए, जो हरियाणवीं लोकसमाज के पारम्परिक मूल्यों की स्थापना में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं। 'छन्न' एक ऐसी ही विधा है, जो हमारे लोकजीवन के मूल्यों को बरकरार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है।

मूल शब्दः छन्न पकइया, दिवाल़ा, बड़लियां कै बांस, भाब्भी, लोट्टा, सारी साल़ी सुथरी, बताणे आल़ी, चुम्बा, बेरी, तीर, लिकडय़ा, सूरमेआल़ी

वास्तव में 'छन्न' शब्द छंद का ही अपभ्रंशित स्वरूप है। छन्द की बिगड़ी हुई शैली में 'छन्न' को प्रस्तुत किया जाता है। विवाह गीतों में श्लोक अथवा छंद के रूप में कुछ तुकांत मुक्तक गाए जाते हैं। ये मुक्तक प्राय: दोहा छन्द में होते हैं, कहीं चार मात्राएँ बढ़ जाती है, तो कहीं दो मात्राएं कम हो जाती है। मगर लोकजीवन में छन्दों के गाने का उद्देश्य भावों की मधुरता की अभिव्यक्ति करना है, न कि काव्य–शास्त्रीय दृष्टि से छंद की कसौटी पर खरा उतरना। डॉ. जयनारायण कौशिक ने हरियाणवीं हिन्दी कोश में 'छन्न' को परिभाषित करते हुए लिखा है कि – वह कविता या पद जो दूल्हे की साळियाँ उसके पिंगल ज्ञान तथा बुद्धि, स्वभाव आदि की परख के लिए फेरे होने के बाद सुनाने को कहती हैं। (दुल्हन के पक्ष की ओर से हर 'छन्न' पर कुछ निधि या वचन दिया जाता है), फेरे हो चुकने के बाद कन्या–पक्ष की लड़कियों द्वारा दूल्हे से पद्य–बद्ध बात सुनना तथा वर की अभिलाषा या इच्छा जानना।[1] कहा जा सकता है कि 'छन्न' छंद का ही बिगड़ा हुआ स्वरूप है, जिसमें मात्राएं आगे–पीछे एवं ऊपर–नीचे हो सकती हैं, जो काव्यशास्त्रीय दृष्टि से शास्त्रीय कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता, किंतु भावनात्मक दृष्टि से वर की मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। विवाह के अवसर पर फेरों के पश्चात् पितरों के समक्ष वर के बौद्धिक परीक्षण के लिए वधू पक्ष की महिलाओं के बीच दूल्हे द्वारा आशुकविता, बौद्धिकता, मनोरंजनात्मक, व्यंग्यात्मकता, हास्यात्मकता, हाजिर–जवाबी, काव्यात्मकता, त्वरित, तुकबंदी, शृंगारिकता, स्पष्टवादिता, वाक्–चातुर्यता, सटीकता, समन्वयता एवं आधुनिकता से परिपूर्ण जो अभिव्यक्ति की जाती है, उसे हरियाणवीं लोकजीवन में 'छन्न' की संज्ञा दी गई है।[2]

'छन्न' की विशेषताएं

'छन्न' वास्तव में हरियाणवीं लोकजीवन में संस्कारों से सम्बन्धित एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से दूल्हे की कवि हृदय की साक्षात् परीक्षा होती है। ऐसे में, वह विवाह से पहले ही अपने साथियों से प्रशिक्षण लेने से भी नहीं हिचकता। हरियाणवीं लोकजीवन में प्रचलित इस वैवाहिक विधा के माध्यम से प्रत्येक दूल्हे को गुजरना होता है, तो ऐसे में उसके स्वभाव, उसके कवि–हृदय, उसकी बौद्धिकता, उसकी तत्परता, उसकी व्यंग्यात्मकता, उसकी तुकांतता, उसकी हास्यात्मक अभिव्यक्ति, हाजिर–जवाबी, शृंगारिकता सभी की वधू पक्ष के सामने परीक्षा होती है। उक्त सभी विषय–वस्तु ही 'छन्न' की विशेषताओं में समाहित होते हैं।

1. **आशुकविता/तत्परता** – 'छन्न' मूलत: आशुकविता ही है, जो दूल्हे एवं उसके साथियों द्वारा तत्परता के साथ तुरंत रची जाती है। यह आशुकविता वातावरण एवं माहौल के अनुसार रची जाती

   छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर आंगी,
   बीरमती नै तो ब्याह चाल्ले, संतरो नै दे द्यो मांगी।[3]

2. **बौद्धिकता**–वास्तव में 'छन्न' विवाह के अवसर पर बौद्धिक परीक्षण का एक माध्यम हैं। विवाह के मौके पर वधू पक्ष वर पक्ष एवं दूल्हे का बौद्धिक दोहन करते हैं। इससे जहां दूल्हे के बौद्धिक स्तर का पता चलता है, वहीं पर उसके संस्कारों की भी अभिव्यक्ति होती है।

   छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर केसर,
   सास मेरी पार्वती, सुसर मेरा सै परमेसर।[4]

3. **मनोरंजनात्मकता**–हरियाणवीं लोकजीवन में मान्यता है कि बरात में बाराती सबसे ज्यादा खुरापाती होता है। उसकी सम्पूर्ण सोच विवाह में मनोरंजन करने की ओर अग्रसर होती है। विवाह की सम्पूर्ण प्रक्रिया मनोरांजनात्मक होती है, क्योंकि उसमें वधू पक्ष की महिलाएं बारातियों की परस्पर शृंगारिक झड़पें होती रहती हैं। इससे बारातियों को पूरा मनोरंजन होता रहता है। जैसे–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर बादाम,
इस भूंडी सी नै छोडक़ै, सब नै मेरी राम–राम।[5]

4. **व्यंग्यात्मकता**–यहां के लोगों को कटाक्ष करने की परम्परागत आदत है। यह आदत कैसे बनी, क्यों बनी और कब बनी, यह ऐतिहासिक सवाल है? इसके पीछे अनेकों ऐसे कारण रहे हैं, जिनका जवाब इतिहास में ही मिल सकता है। इसका असर छन्नों में भी देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइयां–छन्न पकइयां, छन्न पके का लौट्टा,
इस्यां कै हम ब्याहवण आए, जड़ै पाणी का भी टौट्टा।[6]

5. **तुकांतता**–'छन्न' वास्तव में तुकांतता की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए, क्योंकि तुकांतता के माध्यम से अभिव्यक्ति का जो प्रभाव जन–समूह पर पड़ता है, वह मुक्तक का नहीं। तुकांतता के माध्यम से जहां दूल्हे एवं उसके साथियों के कवि–हृदय का परीक्षण होता है, वहीं पर 'छन्न' की सटीकता की भी अभिव्यक्ति होती है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर आल़ा,
अक्कल आली मेरी साल़ी, सोणा मेरा साल़ा।[7]

6. **हास्यात्मकता**–हरियाणवीं लोकजीवन में कदम–कदम पर हास्य बिखरा हुआ पड़ा है। हर बात पर हास्यात्मक उक्ति को प्रस्तुत करना यहां के लोगों की दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका असर विवाह के मौके पर दो गुना एवं तीन गुना हो जाता है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर बेरी,
बेरी मैं त तीर लिकडय़ा, सूरमे आल़ी मेरी।[8]

7. **हाजिर–जवाबी**–हरियाणवीं जन–मानस हाजिर–जवाबी के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है, वह विपरीत से विपरीत परिस्थिति में सटीक बात कहने से नहीं चूकता। ऐसे में भला, 'छन्न' की अभिव्यक्ति में त्वरित जवाब न दे, ऐसा कैसे संभव हो सकता है? उदाहरण–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर लौट्टा,
सुकड़–सुकड़ कै फेरे ल्यूं था, बगड़ थारा था छौट्टा।[9]

8. **काव्यात्मकता**–वास्तव में, छन्न काव्यत्मक अभिव्यक्ति है, जो छन्द का ही एक स्वरूप है। प्रत्येक जन–मानस में काव्यात्मक प्रतिभा का अंश विद्यमान होता है। उस अंश को वह कितना विकसित करता है, यह उसके अभ्यास पर निर्भर होता है। दूल्हा 'छन्न' कुहाई के विषय में पहले से ही जानता होता है, क्योंकि वह आस–पड़ोस के साथियों एवं दोस्तों, रिश्तेदारों आदि के विवाह में जाकर 'छन्न' कहने की परम्परा को देख चूका होता है, उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर थाल़ी,
और छन्न जिब सुणाऊं, जिद हाथ जोड़ै जै साल़ी।[10]

9. **श्रृंगारिकता**–लोकसाहित्य एवं श्रृंगारिकता का परस्पर चोली एवं दामन का सम्बन्ध है। श्रृंगारिकता के बिना लोकसाहित्य की सृजनात्मकता की कल्पना नहीं की जा सकती। श्रृंगारिकता वास्तव में मानवीय भाव है, जो किसी न किसी रूप में, कहीं न कहीं उजागर होता है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर तुम्बा,
सारी साल़ी सुथरी, बताणे आल़ी का मन्नैं मुंह चुम्बा।[11]

10. **आंचलिकता**–विवाह के अवसर पर 'छन्न' कहने की परम्परा में आंचलिकता का समावेश होना नितांत अनिवार्य है। इन छन्नों के माध्यम से जहां माता–पिता, गांव, क्षेत्र–विशेष का जिक्र आता है, वहीं पर अंचल विशेष की विशेषताओं को भी समाहित किया जाता है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर लोट्टा,
करहंस मैं ब्याहण आया, जुगेन्द्र का भाई छोट्टा।[12]

11. **स्पष्टवादिता**–हरियाणवीं जनमानस स्पष्टवादी होता है। वह जो कुछ कहता है–स्पष्ट कहता है। हरियाणा में इसे खरी–खरी कहणा, मुंह पै कहणा, सबकै स्याम्ही कहणा आदि नामों से जाना जाता है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर चाब्बी,
दूसरा छन्न तब कहूं, जब मट्ठो देवै बहू की भाब्भी।[13]

12. **वाक्चातुर्यता**–वास्तव में विवाह के अवसर पर हरियाणवीं लोकजीवन में दूल्हा एवं दुल्हन पक्ष दोनों ही अपनी–अपनी वाक्चातुर्यता का परिचय देकर एक पक्ष दूसरे पक्ष को हंसी–मजाक के रूप में हराने का प्रयत्न करता है। ऐसे में, जिस पक्ष में अनुभव एवं वाक्चातुर्य समर्थक ज्यादा होते हैं। उदाहरण–

छन्न कहूं, छन्न कहूं, छन्न कहूं मैं खास,
आ+गला छन्न मैं तब कहूं, जब दूध प्यावै मेरी सास।[14]

13. **सटीकता**–हरियाणवीं छन्नों की अभिव्यक्ति के समय सटीक 'छन्न' की प्रस्तुति ही दूल्हे को महिलाओं द्वारा ली जाने वाली परीक्षा में सफल होने का कारण बनती हैं। हरियाणवीं जनमानस सटीक अभिव्यक्ति का परिचायक होता है। उदाहरण–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर कांस,
छोटलियां कै बाही देद्यूं, बड़लियां कै बांस।[15]

14. **समन्वयता**–हरियाणवीं लोकजीवन में जितने भी उत्सव, संस्कार एवं परम्पराओं का आयोजन किया जाता है, उनका मूल ध्येय परस्पर समाज में समन्वयता की स्थापना करना होता है। विवाह के अवसर पर देवी–देवताओं के थापे लगने के पश्चात् उनके सामने महिलाओं द्वारा बटेऊ की छन्नों के माध्यम से जो परीक्षा ली जाती है। उदाहरण के लिए–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर दिवाल़ा,
दूसरा छन्न तब कहूं, जब पाणी ल्यावै मेरा साल़ा।[16]

15. **आधुनिकता**–परिवर्तन प्रकृति की सहज धारा है, इसी कसौटी पर हमारी परम्पराएं, मान्यताएं, रीति–रिवाज एवं संस्कार निरंतर आधुनिकता की चपेट में आकर बदलते रहते हैं। कहते भी हैं, जो व्यक्ति एवं समाज वक्त के साथ नहीं चलता वक्त उसे पीछे छोड़ देता है। उदाहरण–

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर गन्ना,
सासु म्हारी हेमा मालिनी, सुसरा म्हारा राजेश खन्ना।[17]

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात् कहा जा सकता है कि हरियाणवीं लोकजीवन में दम तोड़ रही 'छन्न विधा' परम्परागत रूप से सदियों पुरानी रही है। लेकिन वर्तमान दौर में आधुनिकता की चपेट में आने के पश्चात् इसका वजूद खतरे में पड़ गया है। इस विधा के अन्तर्गत अनेक विशेषताएं समाहित हैं, जो हमारे समाज की परम्परागत संस्कारों की परिचायक ही नहीं, अपितु लोकजीवन की साक्षात् अभिव्यक्ति भी हैं। 'छन्न' जहां एक ओर दोनों परिवारों में परस्पर समन्वयता स्थापित करने का कार्य करता है, वहीं पर दूल्हा–दुल्हन के यार–दोस्तों एवं सखी–सहेलियों को परस्पर घुलने–मिलने का अवसर पर भी प्रदान करता है, ताकि दोनों पक्षों का भावी–जीवन सुखद एवं सुनहरा हो सके। आधुनिक दौर में बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण 'छन्न' की महत्ता और अधिक बढ़ गई है, क्योंकि आधुनिकता की इस दौड़ में वैवाहिक एवं पारिवारिक रिश्तों पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि हम अपनी पुरातन परम्पराओं को भुलते जा रहे हैं। 'छन्न' विधा पर अभी तक कोई शोध नहीं हुआ है। ऐसे विषयों को शोध का विषय जरूर बनाया जाना चाहिए, जो हरियाणवीं लोकसमाज के पारम्परिक मूल्यों की स्थापना में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं। 'छन्न' एक ऐसी ही विधा है, जो हमारे लोकजीवन के मूल्यों को बरकरार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. जयनारायण कौशिक, हरियाणवीं हिन्दी कोश, हरियाणा साहित्य अकादमी, 1985, पृ. 265
2. गुलाबराय, काव्य के रूप, आत्मा राम एण्ड सन्स, 1981, पृ. 221
3. डॉ. महासिंह पूनिया, लेखक शोधपत्र
4. नवरत्न पाण्डे, एक साक्षात्कार, दादरी, जुलाई, 2011
5. नीलम, लघु शोध प्रबन्ध, विवाह सम्बन्धी लोकगीतों का तुलानात्मक अध्ययन हरियाणा पंजाब, पृ. 63
6. सुधा शर्मा, लघु शोध प्रबन्ध, पानीपत के लोकगीत संकलन और साहित्यिक विश्लेषण, पृ. 84
7. डॉ. महासिंह पूनिया, लेखक शोधपत्र
8. जगाधरी तहसील के संस्कार सम्बन्धी लोकगीत, संकलन एवं मूल्यांकन, रीता, पृ. 17
9. श्रीमती छन्नों देवी, एक साक्षात्कार, गांव डिडवाड़ी, जिला पानीपत, जुलाई 2011
10. मास्टर दयानन्द, एक साक्षात्कार, गांव दूबलधन माजरा, रोहतक, जुलाई, 2011
11. नवरत्न पाण्डे, एक साक्षात्कार, दादरी, जुलाई, 2011
12. डॉ. शंकरलाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य, पृ. 96
13. डॉ. महासिंह पूनिया, लेखक शोधपत्र
14. श्रीमती छन्नों देवी, एक साक्षात्कार, गांव डिडवाड़ी, जिला पानीपत, जुलाई 2011
15. नवरत्न पाण्डे, एक साक्षात्कार, दादरी, जुलाई, 2011
16. डॉ. महासिंह पूनिया, लेखक शोधपत्र
17. नीलम, लघु शोध प्रबन्ध, विवाह सम्बन्धी लोकगीतों का तुलानात्मक अध्ययन हरियाणा पंजाब, पृ. 71